नित्य कीर्तन : रस रत्नाकर

(नित्य एवं उत्सवों पर गाये जाने वाले पद)

भारतीय विद्या मन्दिर

।। जय श्री कृष्ण।।

प्रकाशकीय

द्वितीय संस्करण

ठाकुरजी श्री मदनमोहनलालजी की अनुकम्पा से पूज्य पिताश्री स्व. माधोदासजी ने ''नित्य कीर्तन : रस रत्नाकर'' का प्रकाशन श्रद्धेय पितामह सेठ गिरधरदासजी की पुण्य स्मृति में करवाया था। पुष्टिमार्गीय सेवा विधि के अनुसार प्रतिदिन और विभिन्न उत्सवादि पर गाये जाने वाले पदों के इस संग्रह का वैष्णवजनों में स्वागत हुआ और इसका दूसरा संस्करण प्रकाशित करने की आवश्यकता का अनुभव हुआ। प्रभु कृपा से मेरा यह परम सौभाग्य है कि श्रद्धेय पितामहश्री गिरधरदासजी मूँधड़ा एवं पूज्य पिताश्री माधोदासजी मूँधड़ा की पुण्य स्मृति में इस कीर्तनग्रंथ का दूसरा संस्करण वैष्णवजनों को अर्पित करने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। मैं इस ग्रंथ में संकलित पदों के रचनाकार कृष्ण-भक्त कवियों के प्रति गहन भाव संवलित श्रद्धा निवेदन करता हूँ कि जिन्होंने महाप्रभु वल्लभाचार्यजी, गुसांईजी विट्ठलनाथजी तथा परवर्ती आचार्य चरणों के सानिध्य-संरक्षण में श्रीकृष्ण की मधुर लीलाओं को अपने रससिक्त पदों में अभिव्यक्त किया है, जो आज भी वैष्णवजनों के हृदय में भक्ति-सुधा का वर्षण करते हैं।

ग्रंथ के प्रारम्भ में देश के शीर्ष विद्वान-आचार्यों में परिगणित परमभागवत आचार्य केशवराम काशीराम शास्त्रीजी ने पुष्टिमार्ग में कीर्तन के महत्व, स्वरूप व उसकी भक्तिवर्षणी शक्ति तथा भक्तवत्सल भगवान श्रीकृष्ण की नित्य-सेवा व उत्सव-सेवा में उसके नियोजन का हृदयग्राही प्रतिपादन किया है, मैं पूज्य शास्त्रीजी के प्रति हृदय के गहन तल से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। इसी क्रम में पूज्य गोस्वामी श्याममनोहरजी ने इस द्वितीय संस्करण में पुरोवाक् लिखकर और पू. गोस्वामी मिलनकुमार जी ने 'कीर्तनं सुखदं सदा' लिखकर जो आशीर्वाद प्रदान किया है उसके लिए मैं उनका अत्यंत कृतज्ञता के साथ सादर प्रणाम, दंडवत निवेदित करता हूँ। ग्रंथ के इस द्वितीय संस्करण के प्रकाशन में भारतीय विद्या मन्दिर की द्वैमासिक शोध पत्रिका **वैचारिकी** के सुधी सम्पादक डॉ. बाबूलाल शर्मा द्वारा इस ग्रन्थ में कुछ और कीर्तन संकलित करने व मुद्रण-प्रकाशन संबंधी परामर्श एवं श्री नारायणदास रंगा द्वारा प्रूफ संशोधन हेतु मैं इनके प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। अंत में मैं पुष्टिमार्गीय कीर्तन के पदों एवं संगीत की मर्मज्ञ पूज्य चाचीजी (श्रीमती रविप्रभा बर्मन) को प्रणाम निवेदन करता हूँ जिन्होंने अत्यंत परिश्रम पूर्वक इस कीर्तन रत्नाकर के प्रत्येक पद का अवलोकन कर संशोधन किया और बहुमूल्य मार्गदर्शन प्रदान किया। इस पुस्तक को प्रशासनिक सहायता एवं प्रिंटिंग स्वरूप में लाने के लिए मैं श्री शँकरलाल सोमानी को उनके अथक प्रयास के लिए आशीर्वाद देता हूँ। साथ ही बी.के. ऑफसेट, दिल्ली एवं आर्यावर्त्त संस्कृति संस्थान के संचालक श्री गोविन्दलाल सिंह को भी पुस्तक के प्रकाशन हेतु उनके सतत् प्रयास के लिए धन्यवाद करता हूँ।

आशा है, भारतीय संस्कृति व साहित्य के संरक्षण एवं प्रसार हेतु समर्पित संस्था 'भारतीय विद्या मंदिर' द्वारा प्रकाशित इस ग्रंथ 'नित्य कीर्तन : रस रत्नाकर' का आप अपनी नित्य प्रभु सेवा में उपयोग कर ग्रंथ के संबंध में अपने विचारों से अवगत कराने की कृपा करेंगे।

श्रीवल्लभ चरणानुरागी सभी वैष्णवजनों के प्रति -बिट्ठलदास मूँधड़ा का सादर जयश्रीकृष्ण

प्रकाशकीय

प्रथम संस्करण

भक्ति मार्ग में नाम, जप, पूजा-अर्चना, प्रभु-सेवा के साथ भजन गायन का बहुत महत्व है। चाहे वह नाम-संकीर्तन हो, रामायण गान हो, गुरुवाणी के सबद-कीर्तन हों, निर्गुणिये संतों के दोहे या सूफी कलाम हों, या फिर पुष्टिमार्गीय कृष्ण भक्त कवियों का हवेली संगीत हो—सभी मार्गों में आराध्य से अपना सीधा सम्बन्ध स्थापित करने के लिए कीर्तन-गायन बड़ा सुगम उपाय है।

साहित्य व संगीत दोनों दृष्टियों से हवेली-संगीत की परम्परा अति समृद्ध, प्राचीन और प्रामाणिक है। संगीत की दृष्टि से यहां 'ध्रुपद-धमार' की पुरातन शैली अपने उत्कर्ष पर मिलती है। साथ ही 'ख्याल', 'होरी' और 'ठुमरी' भी हवेली संगीत की आभारी हैं। विषय की दृष्टि से अन्यान्य भक्ति-संगीत में विशेषत: आराध्य की महानता और अपनी दीनता, ज्ञानोपदेश व नीति की बातें रहती हैं पर पुष्टिमार्गीय कीर्तन प्रभु के लीला-गान के रूप में भजनानंद-रस-निर्झर हैं, जिनमें अवगाहन कर गायक व श्रोता भक्त स्वयं को भूलकर उस लीला-पुरुषोत्तम से तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। पुष्टिमार्ग के उत्कृष्ट विद्वान परम भगवदीय आचार्य केशवराम काशीराम शास्त्री ने इस पुस्तक की भूमिका में इस विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला है। उनकी इस कृपा के लिए मैं नतमस्तक होकर, शास्त्री जी के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

पुष्टिमार्गीय कीर्तनों का संग्रह एक दुस्साध्य कार्य है। 'अष्टछाप' के कवियों तथा अन्यान्य भक्तों ने असंख्य पदों की रचना की है। उनमें से जितने पद उपलब्ध हैं, उन्हीं को एक स्थान पर संकलित करें तो पुस्तक का आकार बहुत बड़ा हो जाता है। अत: प्रभु प्रेरणा से परिपाटी के अनुसार मैंने कीर्तनों को चार भागों में प्रस्तुत करने का विचार किया है—

'नित्यसेवा', 'उत्सव', 'वर्षा' तथा 'वसंत-धमार'। वसंत धमार का संग्रह 'कीर्तन-रस-रत्नाकर' के नाम से श्री मदनमोहन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हो चुका है। अब नित्य सेवा के कीर्तनों का यह संग्रह आपके समक्ष है। प्रभु के अनुग्रह से ही यह कार्य निष्पन्न हुआ है, मैं तो निमित्त मात्र हूँ। शीघ्र ही 'उत्सव' कीर्तनों को संग्रहित कर सकूँ, ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

एक बात और- अष्टछाप के कीर्तनकार रससिद्ध कवि होने के साथ-साथ उत्कृष्ट संगीतज्ञ भी थे। प्राचीन रागों के शुद्ध स्वरूप के जानकार थे। विद्वानों से ऐसा सुना है कि वसन्त, पूर्वी, गौरी, कान्हड़ा आदि रागों के प्राचीन प्रकार हवेली संगीत में ही मिलते हैं। खेद का विषय है कि इस तथ्य से अनभिज्ञ होने के कारण

आज के कीर्तनकार पुरानी परम्परा में 'सुधार' करके उन रागों को नए ढंग से गाने में ही रुचि रखते हैं। सूरदास जी किसी राग को किस प्रकार गाते थे यह प्रामाणिक रूप से बताना असम्भव है। क्योंकि उनका संगीत आज उस रूप में सुरक्षित नहीं है। फिर पदों के साथ केवल रागों के नाम दिए हुए हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए ऐसी प्रेरणा हुई कि आज भी जितना सम्भव हो सके हवेली-संगीत की लुप्त होती परम्परा को बचाने की चेष्टा की जाए। इसके लिए वयोवृद्ध कीर्तनिया श्री जगतनारायण गोस्वामी (श्री ढुंढ महाराज) को बीकानेर से बुलवाकर वर्ष भर के कीर्तनों से कुछ पद चुनकर १६ कैसेटों में भरवाकर प्राचीन परम्परा को सुरक्षित रखने की चेष्टा की है। 'कीर्तन सेवा' के इन १६ कैसेटों में प्राय: पौने तीन सौ पद निबद्ध हैं जिन्हें श्री ढुंढ महाराज जैसे गुणी कीर्तनिया ने हवेली संगीत की पारम्परिक शैली में गाया है। प्राय: ८० वर्ष की आयु होते हुए भी ढुंढ महाराज का सुमधुर कंठ, स्वर, ताल और पारम्परिक शैली आगामी पीढ़ी के लिए दिशा निर्देश करती है। प्रभु के अनुग्रह और आप सबके आशीर्वाद से यह कार्य और आगे बढ़े तो मेरा सौभाग्य होगा।

पुस्तक के बहुत से पदों का संकलन श्री कन्हैयालाल बागड़ी एवं श्री गोवर्द्धनदास दमानी ने बड़े ही परिश्रम व योग्यता से किया है। उनके सहयोग के बिना यह कार्य सम्पादित होना कठिन था। मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। प्रकाशन का पूरा दायित्व भाई जयकिशनदास जी सादानी ने कुशलता व रुचि के साथ सम्पन्न किया है, उन्हें मेरा धन्यवाद व साधुवाद।

विनीत

माधोदास मूँधड़ा

PUBLISHER
BHARATIYA VIDYA MANDIR
12/1, Nellie Sengupta Sarani
Kolkata - 700087
Mob. +919830559364

9 788189 302351
न्यौछावर ₹ 900